राजा को प्रजा नहीं, चापलूस पसंद है!

डॉ0 सुनील कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग
श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भुड़कुड़ा,गाजीपुर.

भारत के लोकतंत्र और प्राचीन राजतंत्र के अलावा भी देखा जाए तो एक बात बहुत गहराई से समझ में आती है कि राजा को प्रजा की ज़रूरत तो होती है, पर पसंद हमेशा चापलूस ही आते हैं। 'पर शायद राजा अनभिज्ञ है या समझ रहे हों कि चापलूस अब राजा बनना चाहता है। 'राजा बिना चापलूस के अधूरा है । क्योंकि प्रजा सवाल पूछती है, जबकि चापलूस राजा की नींद के लिए लोरी गाता है।' राजा भी जानता है कि असली जनता तो नाराज़ ही रहेगी, इसलिए खुश रहने के लिए चापलूस ही काफी हैं। कहते हैं कि राजा का हृदय विशाल होता है। वह सबकी सुनता है, सबकी चिंता करता है। पर असलियत में उसका हृदय केवल 'जय हो महाराज' सुनकर ही खिलता है। प्रजा उसे बोझ लगती है। चुनौतियाँ, शिकायतें, रोना-धोना आदि आदि किसे पसंद है भाई। लेकिन चापलूस? अहा! वो तो राजा की जिंदगी का गुलाबजामुन है। मीठा भी, चिपकू भी।

प्रजा-राजा और चापलूस (परिचय)

प्रजा, महाराज, खेत सूख रहे हैं, अनाज कि भारी कमी है, त्राहिमाम! त्राहिमाम!'

राजा, (छींकते हुए) आ..छी..! हे भगवान! सुबह-सुबह इतना टेंशन? मैंने तो दरबार सजवाया था ताकि कोई मेरी शान में कविता सुनाए ।

चापलूस, महाराज! ये कोई साधारण छींक नहीं। यह तो संदेश है कि अब बादल बरसेंगे। धरती भी आपकी आज्ञा से काँप रही है।

राजा, (गदगद होकर) सचमुच? तो क्या मेरी छींक से मौसम बदलता है?

चापलूस, बिल्कुल महाराज! 'कल अगर आप दो बार खाँस दें, तो सूखा भी खत्म हो जाएगा।'

राजा तुरंत मुस्कुरा देता है 'वाह! यही है सकारात्मक सोच !' ***

चापलूस का विज्ञान

चापलूस कभी पैदा नहीं होता, वह मेहनत करके बनता है। उसे समय और परिस्थितियाँ गढ़ती हैं जिसका दिमाग गूगल से भी तेज़ चलता है। बेरोज़गार युवा जब काम नहीं पाता, तो धीरे-धीरे उसे पता चलता है कि चापलूसी ही सबसे सुरक्षित रोजगार है। इसमें न डिग्री चाहिए, न पूँजी, बस मोटी चमड़ी और मीठी ज़ुबान। राजा खाँसेगा तो तुरंत बोलेगा, महाराज, धरती भी आपकी खाँसी की गूँज सुनकर काँप उठी। राजा छींक देगा तो कहेगा, ये तो आपके आशीर्वाद की फुहार है। राजा का चेहरा अगर नींद से बोझिल हो तो बोलेगा, महाराज, आपकी पलकों का झुकना भी सूर्यास्त जैसा भव्य लगता है। प्रजा के लिए तो नहीं पर चापलूस के लिए राजा के दरवाज़े हमेशा खुले रहते हैं। वह राजा की कुर्सी के चारों ओर इस तरह घूमता है जैसे 'किसी ग्रह का उपग्रह।' चापलूस लोकतंत्र का असली जनप्रतिनिधि होता है। वह राजा के लिए जनता की आवाज़ को फ़िल्टर करता है। जैसे चाय में छन्नी काम करती है। ऊपर मिठास, नीचे कड़वाहट। चापलूस की कला को विज्ञान की दृष्टि से समझना चाहिए। यह व्यक्ति दरअसल मनोविज्ञान का जादूगर होता है। जब राजा भाषण दे रहा हो और जनता जम्हाई ले रही हो, तभी चापलूस सबसे ज़ोरदार ताली बजाता है। जनता सोचती है, शायद हमने ही कुछ मिस कर दिया। और राजा सोचता है देखो, जनता मेरी बातों पर मोहित हो रही है। चापलूस राजा की कमियों को भी उपलब्धियों में बदल देता है। सड़क टूटी है तो कहेगा महाराज, आपने जनता को रोमांचक अनुभव देने के लिए यह एडवेंचर पार्क बनाया है। पानी नहीं आ रहा तो कहेगा, जनता को उपवास और संयम सिखाने की यह अद्वितीय योजना आपकी ही देन है।

आजकल चापलूसों की नई पीढ़ी आई है। ये टीवी चैनलों पर एंकर बनकर राजा की तारीफ़ करते हैं। सोशल मीडिया पर ट्रोल बनकर आलोचकों को देशद्रोही साबित करते हैं। और सभाओं में पेड-क्राउड बनकर 'जय हो' का नारा लगाते हैं। यानी, अब चापलूस एक स्टार्टअप की तरह है। हर जगह, हर प्लेटफ़ॉर्म पर उपलब्ध।

राजा-प्रजा और चापलूस दृश्य दरबार (संवाद)

राजा अपने सिंहासन पर संयमित, सुदृढ़, शांत बैठे हैं। प्रजा बाहर कतार में आशावान है। दरबार के भीतर सबसे आगे राजा के पास सिर्फ़ चापलूस खड़ा है।

राजा, (आह भरते हुए) यह प्रजा बड़ी परेशान नजर या रही है। हर दिन नई शिकायत! कोई अनाज माँगता है, कोई दवा, कोई नौकरी।

इतना सब कुछ कहाँ उपलब्ध?

चापलूस (मुस्कुराते हुए), महाराज, चिंता मत कीजिए। प्रजा का काम तो रोना ही है। असल में वे रोते ही इसलिए हैं ताकि आपकी दया दिखे और आपका यश फैले।

राजा, (हैरानी से) अरे, ऐसा है? तो क्या वे जानबूझकर परेशान होते हैं?

चापलूस, बिल्कुल! जैसे नाटक का कलाकार खून से सना तलवार लेकर मरने का अभिनय करता है, वैसे ही जनता आपके लिए भूख-प्यास का अभिनय करती है। असल में सब आपके चरणों की छाया में सुखी हैं।

तभी एक प्रजा दरबार में घुस आती है ।

प्रजा, महाराज! गाँव में सड़क टूटी है, बारिश में हम गड्ढों में गिरते हैं ।

राजा, (भौं सिकोड़ते हुए) ये कैसी बदतमीज़ी है? हमारे दरबार में आकर मन दुखा रही है!

चापलूस, (हाथ जोड़कर) महाराज, दरअसल ये आपकी दूरदर्शिता की तारीफ़ कर रही है। आपने सड़कों को एडवेंचर पार्क जो बना दिया है। अब हर आम आदमी को रोमांच मुफ्त में मिल रहा है।

राजा, (खुश होकर) वाह! यही तो है हमारी नीति। तुम्हारी बातें सुनकर मन खिल जाता है।

प्रजा, (हैरान होकर) अरे! मैं तो शिकायत कर रही थी।

चापलूस, (गंभीर स्वर में) चुप रहो! राजा की नीतियाँ समझने के लिए तुम्हारा स्तर बहुत छोटा है।

दूसरी प्रजा का प्रसंग 'बिजली कटौती'

प्रजा, महाराज, गाँव में दिनभर बिजली नहीं रहती, बच्चे पढ़ नहीं पाते ।

राजा, (परेशान होकर) ये तो गम्भीर समस्या है।

चापलूस, (ताली बजाते हुए) महाराज, यही तो आपकी महानता है। आप बच्चों को मोबाइल और टीवी से दूर करके तारों की छाँव में पढ़ने का अवसर देते हैं। आपका हर आदेश शिक्षा नीति जैसा है।

राजा, (हँसते हुए) सही कहा! मैं तो सचमुच युगपुरुष हूँ।

प्रजा, (तंग आकर) महाराज, कम से कम पंखा तो चलाइए।

चापलूस, (कड़क आवाज़ में) अरे मूर्ख! हवा तो पेड़ों से भी मिलती है। राजा का पेड़ लगाओ अभियान ही तुम्हें ठंडी हवा दे रहा है।

निष्कर्ष :-

चापलूस कहता है महाराज, सच्चाई यही है 'प्रजा आपकी कुर्सी हिलाती है, और हम चापलूस उस पर गद्दा बिछाते हैं। प्रजा आईना दिखाती है, हम सेल्फ़ी दिखाते हैं। प्रजा सवाल करती है, हम कविता गाते हैं।'

राजा, (हँसते हुए) सही कहा! अब से दरबार में प्रजा का प्रवेश वर्जित है। केवल चापलूस ही आएँगे ताकि मेरा मन हर दिन प्रसन्न रहे।

पर्दा गिरता है

और जनता दरबार के बाहर लंबी लाइन में खड़ी रह जाती है..

जबकि अंदर राजा और चापलूस गुलाबजामुन बाँट रहे होते हैं ।

***